Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वराह पुराण का काल–निर्धारण

डॉ० बबलू शर्मा
शोध निर्देशक, सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।
मूर्ति
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

प्रस्तावना

भारतीय धर्म तथा संस्कृति के स्वरूप को जानने के लिए पुराणों का अनुशीलन अत्यन्त आव यक है। पुराण भारतीय साहित्य का गौरव ग्रन्थ है। प्राचीनकाल से ही भारतवर्ष में पुराणों का पठन–पाठन एंव श्रवण मनन होता आया है। सामान्य भारतीय के हृदयतल में ज्ञान, भक्ति, श्रद्धा, वैराग्य, सदाचरण तथा धर्म–परायणता के उत्तम तत्त्वों का संस्कार पुराणों ने ही प्रतिष्ठित किया है। पुराणों के विषय में वेदव्यास ने तो स्कन्दपुराण में यहाँ तक कह दिया कि जो वेदों में नहीं देखा गया, जो स्मृतियों में भी नहीं देखा गया तथा जो दोनों में नहीं देखा गया, वे सब भी पुराणों में सन्निहित है। यथा–

''यन्न दृष्टं हि वेदेषु न दृष्टं स्मृतिषु द्विजाः।
उभयोर्यन्न दृष्टं च तत्पराणेषु गीयते।।'' (स्कन्द पुराण 7–1–2–92)

इसीलिए भारतीय वाड्.मय में पुराणों की व्यापकता और उसकी महत्ता का गान भी अपरिमित एवं असन्दिग्ध रूप से निरन्तर होता आ रहा है।

पुराण शब्द की परिभाषा

'पुरा भवम्' 'पुरा' अव्यय से भव इस अर्थ में 'ट्यु' प्रत्यय करने से पुराण शब्द बनता है। पुराण शब्द की व्युत्पत्ति आचार्य पाणिनि, महर्षियास्काचार्य तथा स्वयं पुराणों ने भी दी है। आचार्य पाणिनि ने अष्टाध्यायी में सूत्र के माध्यम से पुराण शब्द का प्रयोग किया है–

पूर्वकालैक–सर्व–जरत्–पुराणनव–केवलाः समानाधिकरणेन। (2.1.49)

महर्षियास्काचार्य ने अपने निरुक्त नामक ग्रन्थ में पुराण शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है–

पुरा नवं भवति। (3.19) अर्थात्

जो प्राचीन होकर भी नया होता है।

वायु पुराण के अनुसार पुराण शब्द की व्युत्पत्ति है–

पुरा अनति।

अर्थात्

प्राचीनकाल में जो जीवित था।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

पद्म पुराण के अनुसार पुराण शब्द की व्युत्पत्ति है–

पुरा परम्परां वष्टि पुराणं तेन तत् स्मृतम्। (5.2.53)

अर्थात्

जो परम्परा की कामना करता है। वह पुराण कहलाता है।

पुराण का लक्षण

अमरकोश में पुराण के लक्षण के विषय में यह श्लोक मिलता है–

सर्ग च प्रतिसर्ग च वंशों मन्वन्तराणि च।
वं यानुचरितं चेति पुराण पंचलक्षणम्।।

अर्थात्

पुराण ग्रन्थ में पाँच विषयों का प्रतिपादन होता है–

1. सर्ग 2. प्रतिसर्ग 3. वंश 4. मन्वन्तर 5. वंशानुचरित

श्रीमद्भागवत पुराण में पुराणों के दश लक्षण है–

सर्ग चाथ विसर्ग च वृत्ति रक्षान्तराणि च।
वंशों वंशानुचरितं संस्था हेतुरपाश्रयः।। (भाग० 12/7/9)

अर्थात्

1. सर्ग 2. विसर्ग 3. वृत्ति 4. रक्षा 5. अन्तराणि 6. वंश 7. वंशानुचरितम् 8. संस्था 9. हेतुः 10. अपाश्रयः।

पुराणों की संख्या

संस्कृत वाङ्.मय में अष्टादश संख्या पावन मानी जाती है। महाभारत की पर्वसंख्या 18 हैं, भगवद्गीता के अध्यायों की संख्या 18 हैं तथा भागवतपुराण की श्लोक संख्या भी 18 हैं। इसी प्रकार पुराणों की संख्या भी प्राचीनकाल से ही 18 मानी गयी हैं। देवीभागवत ने आद्य अक्षर के निर्देश से अष्टादश पुराणों के नाम इस प्रकार दिए हैं–

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुश्टयम्।
अनापलिंग–कू–स्कानि पुराणानि पृथक्–पृथक्।। (देवीभागवत 1–3–21)

वराह पुराण का परिचय

विष्णु ने वराहरूप धारण कर पृथ्वी का पाताल लोक से उद्धार किया था। इस कथा से मुख्यतः सम्बन्ध रखने के कारण इस पुराण का नाम वराह पुराण पड़ा है। यह एक वैष्णव पुराण हैं। वराह पुराण का लक्षण मत्स्य पुराणकार ने इस प्रकार लिखा है–

महावराहस्य पुनर्माहात्म्यमधिकृत्य च।
विष्णुनाऽभिहितं क्षोव्यै तद्वराहमिहोच्यते।।
मानवस्य प्रसङ्.गेन कल्पस्य मुनिसप्तमाः।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

चतुर्विंशत्हस्त्रणि तत्पुराणमिहोच्यते।। (मत्स्य पुराण 53/34/39)

इसका तात्पर्य यह है कि महावराह भगवान् के माहात्म्य को अधिकृत करके विष्णु ने पृथ्वी से जो पुराण कहा है वही वराह पुराण कहा जाता है। इसमें मानवकल्प के प्रसड्.ग से कथाओं का उन्मीलन है। वराह पुराण चौबीस हजार श्लोकों से निबद्ध था, परन्तु आज इतने श्लोक इस पुराण में प्राप्त नहीं होते हैं। नारद पुराण में वराह पुराण के दो भाग तथा चौबीस हजार भलोकों की चर्चा की गयी है।[1] अग्निपुराण में यह भलोक संख्या घटाकर चौदह हजार लिखी गयी है–

चतुर्दशसहस्त्राणि वाराहं विष्णुनेरितम्।
भूमौ वराहचरितं मानवस्य प्रवर्तितम्।। अग्नि पुराण 272/16

कलकत्ते की एशियाटिक सोसायटी से इस ग्रन्थ का जो संस्करण प्रकाशित हुआ है उसमें केवल 10,700 श्लोक हैं।[2] किसी–किसी संस्करण में अध्यायों की संख्या 217 तथा 9,654 भलोक प्राप्त होते हैं।[3] अष्टादश पुराण में वराह पुराण के अध्यायों की संख्या 218 हैं।[4] परन्तु स्वयं ग्रन्थ के अन्दर केवल 215 अध्याय ही हैं जो आनन्द स्वरूपगुप्त, डॉ० सुरकान्त झा, श्री एस. एन. खण्डेलवाल द्वारा बताये गये हैं।

पाठभेद के आधार पर वराह पुराण के दो संस्करण प्राप्त होते हैं – 1. गौडीय संस्करण 2. दाक्षिणात्य संस्करण। आजकल गौडीय पाठवाला संस्करण ही अधिक प्रसिद्ध है। इस पुराण के दो अंश विशेष महत्त्व के हैं–

1. मथुरा माहात्म्य– इसमें मथुरा के समग्र तीर्थों का बड़ा ही विस्तृत वर्णन किया गया है।
2. नचिकेतोपाख्यान– इसमें नचिकेता का उपाख्यान बड़े विस्तार के साथ दिया गया है। इस उपाख्यान में स्वर्ग तथा नरक के वर्णन पर ही विशेष जोर दिया गया है।

पुराणों का काल

पुराण एक विकासशील साहित्य है। वैदिक युग के अनन्तर ही पुराण विद्या का आरम्भ हुआ तथा कालक्रम में इसमें विविध सामग्री जुड़ती गयी। व्यास ने आरम्भ में इस ज्ञान को क्रमबद्ध किया। उन्होंने अपने शिष्य लोमहर्षण को यह ज्ञान दिया। लोमहर्षण की शिष्य–परम्परा में यह ज्ञान पल्लवित पुश्पित होगा गया। सभी शिष्यों ने मूलगुरु व्यास के नाम पर ही पुराणों में अतिरिक्त सामग्री का संयोजन किया। सभी पुराण–संशोधक 'व्यास' के नाम से ही प्रसिद्ध हुए। इस प्रकार 'व्यास' एक नाम नहीं रहकर कथावाचकों, संशोधकों और व्याख्याताओं का पर्याय बनकर विकासात्मक पौराणिक साहित्य के रचयिता के रूप में आया। फिर भी इस साहित्य का काल तो कुछ होना ही चाहिए।

पुराणों के राजवंश–वर्णनों में 600ई० के पूर्व तक के राजाओं का ही वर्णन हुआ है। इस प्रकार से कुछ विद्वानों का मत है कि पुराण 500ई० में अपने वर्तमान रूप में आ गये थे। फिर भी इस विषय में पर्याप्त मतभेद है। दूसरी ओर प्राचीन धर्मसूत्रों तथा महाभारत में पुराणों का उल्लेख है जिससे पुराणों की रचना की शुरूआत प्रायः 600 ई० पू० में मानी जा सकती है। इन 1100 वर्षों के अन्तराल में पौराणिक साहित्य का भानैः भानैः विकास होता रहा था।

पुराणों की तीन श्रेणियाँ है–

1. प्राचीन (प्रथम भाती से लेकर 400 ईस्वी तक)–इसमें वायु पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, मार्कण्डेय पुराण, मत्स्य पुराण तथा विष्णु पुराण को रखा गया है।
2. मध्यकालीन (500ई० से 900 ई० तक)– इसमें श्रीमद्भागवत पुराण, कूर्म पुराण, स्कन्द पुराण तथा पद्म पुराण को रखा गया है।
3. अर्वाचीन (900ई० से 1000 ई० तक)– इसमें ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्म पुराण, लिङ्.ग पुराण आदि को रखा गया है।

वराह पुराण का काल–निर्धारण

वराह पुराण में भविष्य पुराण का नाम दो स्थानों पर आया है–

भविष्यत्पुराणमिति च तव वादाद् भविष्यति।। वराहपुराणम् (अ० 175/30)

भविष्यमिति ख्यातं कृत्वा पुनर्नवम्।

साम्बः सूर्यप्रतिष्ठां च कारयामास तत्त्ववित्।। वराहपुराणम् (अ० 175/47)

वराह पुराण में लिखा गया है कि सूर्य के मन्दिर यमुना नदी के दक्षिण में, कालप्रिय अर्थात् कालपी में तथा पश्चिम में मूलस्थान जिसे मुल्तान कहा जा सकता है, में विद्यमान है। भविष्य पुराण में भी इसी प्रकार सूर्य के तीन मन्दिरों का समुल्लेख है।[5] श्रीरामानुज सिद्धान्त अर्थात् विशिष्टद्वैत के सम्बन्ध में अनेक विषय वराहपुराण में प्राप्त होते हैं। पुराण पत्रिका के व्यासपूर्णिमाङ्.क में प्रकाशित ''श्रीवराहपुराणं श्रीरामानुजसम्प्रदाय च'' नामक लेख इस सन्दर्भ में दर्शनीय है।[6] इससे यह ज्ञात होता है कि श्रीरामानुज अथवा श्रीवैश्णव सम्प्रदाय के विशिष्टद्वैत विशय सिद्धांत यद्यपि पहले से विद्यमान थे, परन्तु उनका समुन्मीलन दशम शताब्दी में हुआ। अतः वराह पुराण भी दशम शताब्दी से पूर्व ही रचा गया होगा। 'कल्पतरु' में वराहपुराण से 1500 श्लोक व्रत पर, 40 श्राद्ध पर, 250 तीर्थ विशयक, 17 नियत काल पर, 5 दान पर तथा 4 श्लोक गृहस्थ पर उद्धृत किये हैं।[7] ब्रह्म पुराण ने वराहपुराण का उल्लेख करते हुए लिखा है कि जब कन्याराशि में सूर्य हो तो उस पौर्णमासी को पितृश्राद्ध किया जाता है।[8]

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

आर० सी० हाजरा सम्पूर्ण वराह पुराण के सङ्.कलन का कोई एक निश्चित समय निर्धारित कर विभिन्न स्थलों या अध्यायों के समय के निर्धारण का प्रयास करते हैं। इन्होंने वराह पुराण को चार भागों में बाँटा है–

प्रथम भाग (अध्याय 1 से 111 तक)	
I मूलांश	
अध्याय 1–88 एवं 97	800 ईसवीय
II प्रक्षिप्त	
अध्याय 89–95 एवं 98.1–50	1400 ई० के बाद नहीं
अध्याय 96	समय अज्ञात
अध्याय 98 से 111.58 ंइ	1100 ईसवी के बाद नहीं
द्वितीय भाग (अध्याय 112 से 190)	
I मूलांश	
अध्याय 112–139 एवं 179–190	800–1000 ईसवी तक (प्रथम भाग के मूल अध्यायों के बाद)
II प्रक्षिप्त	
अध्याय 140–149	1500 ईसवी के बाद का नहीं
अध्याय 150–178	अध्याय 140–149 के बाद के बाद किन्तु, 'हरिभक्ति विलास' के निर्माण के बाद का नहीं।
तृतीय भाग	
अध्याय 191–210	900 एवं 1100 ईसवी के मध्य
चतुर्थ भाग	
अध्याय 211 से अन्त तक	काल अज्ञात। संभवतः 1100 ईसवी से पूर्व नहीं।

वराह पुराण में प्रायः उत्तर भारत के ही स्थानों का वर्णन हुआ है। अतः आर० सी० हाजरा का यह मत माना जा सकता है। कि इस पुराण का संकलन उत्तरी भाग में हुआ था। आचार्य बलदेव उपाध्याय वराह पुराण का समय नवम–दशम शताब्दी स्वीकार करते हैं।[9] कल्पतरु, हेमाद्रि का 'चतुर्वर्ग चिन्तामणि' तथा बल्लालसेन के 'दानसागर' में वराह पुराण के श्लोक प्राप्त होते हैं। अतः इन सब साक्ष्यों के आधार पर इस पुराण का समय नवम शताब्दी स्वीकार किया जा सकता है।[10]

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

संदर्भ सूची

1. नारद पुराण, पूर्व भाग अध्याय 103/1–14
2. पुराण–विमर्श पृ० 154
3. धर्मशास्त्र का इतिहास–चतुर्थ भाग, पृ० 423
4. अष्टादश पुराण दर्पण, पृ० 287
5. पुराण–विमर्श पृ० 558
6. पुराण पत्रिका (व्यास पूर्णिमाङ्क–जुलाई 1962, पृ० 360–383)
7. धर्मशास्त्र का इतिहास–चतुर्थ भाग, पृ० 423
8. धर्मशास्त्र का इतिहास–चतुर्थ भाग, पृ० 423
9. पुराणविमर्श, पृ० 559
10. पुराणसाहित्यादर्श, पृ० 112

संदर्भ ग्रन्थ सूची

पुराण–विमर्श– आचार्य बलदेव उपाध्याय प्रकाशकः चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी संस्करणः 2021

वराहपुराणम्– अनुवादक एवं सम्पादकःडॉ. सुरकान्त झा प्रकाशकः चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, संस्करणः 2014

वराहपुराणम्– श्री आनन्द स्वरूप गुप्त सर्वभारतीय काशीराजन्यास, दुर्ग रामनगर, वाराणसी संस्करण : 1981

वराहपुराणम्– शषाटीकाकारः श्री एस. एन. खण्डेलवाल प्रकाशकः चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण :2022

संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय प्रकाशकः शारदा निकेतन, वाराणसी संस्करण : 2001

संस्कृत–वाङ्मय का बृहद् इतिहास–आचार्य बलदेव उपाध्याय, (त्रयोदश–खण्ड) प्रकाशकः प्रमोद कुमार पाण्डेय

पुराण निदेशकः उत्तरप्रदेश–संस्कृत–संस्थानम् लखनऊ, संस्करण : 2006